विस्तार पत्रक/भा.कृ.अनु.प./रा.उ.अ.के./2019/03

ऊँटनियों से स्वच्छ दूध उत्पादन

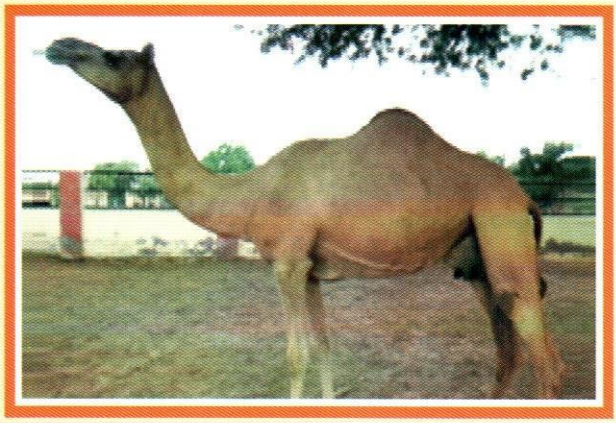

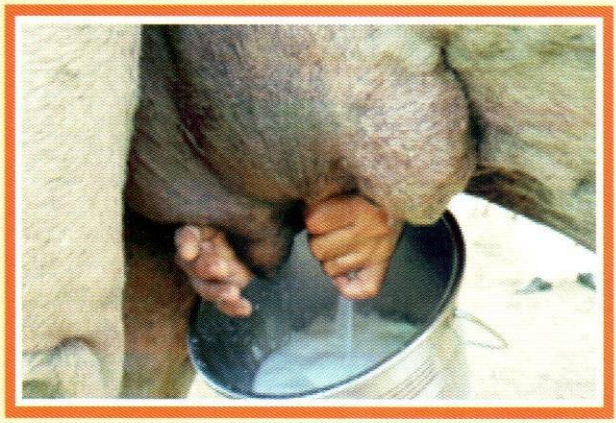

लेखक गण

वेद प्रकाश, बसंती ज्योत्सना

राकेश रंजन, देवेन्द्र कुमार एवं आर के सावल

भा.कृ.अनु.प.- राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

जोड़बीड़, बीकानेर-334001 (राजस्थान)

दूरभाष: 0151-2230183 फेक्स: 0151-2231213

प्रकाशक:- निदेशक, भा.कृ.अनु.पु. - राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

(मारवाड़ी एवं सिंधी ऊँटों का चरित्रण परियोजना)

ऊँट को अब दुधारू पशु के रूप में पाला जा रहा है। अतः हमें इसकी उत्पादन क्षमता के साथ – साथ उसकी गुणवता का भी ध्यान रखने की जरूरत है। इसलिए यह जरूरी है कि दूध का उत्पादन रोग रहित जानवरों से हो तथा डेयरी से जुड़े कार्मिक भी स्वच्छ एवं साफ सुथरे हो। ऊँट की आबादी मुख्य रूप से राजस्थान में है, लेकिन उसके ग्राहक देश के सुदूर राज्यों तक फैले हैं। साथ ही साथ अधिकांश ग्राहक इस दूध का उपयोग किसी बीमारी जैसे मधुमेह, आटिज्म इत्यादि के लिए या शरीर प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने के लिए करते है। इसलिए ग्राहक स्वच्छ दूध ही पसंद करते हैं।

साफ तथा स्वच्छ दूध से क्या अभिप्राय है:-

- स्वच्छ दूध उत्पादन का मतलब स्वस्थ पशु से गंदगी, धूल के कण, गोबर, बाल या मक्खी इत्यादि, हानिकारक जीवाणु, सूक्ष्मजीवियों, ऐंटिबायोटिक या अन्य पशु औषधियों के अवशेषों से मुक्त ऐसे दूध का उत्पादन है जो स्वच्छ, सुगंधित एवं स्वास्थयवर्धक हो तथा जिसकी संचय क्षमता अधिक हो।
- स्वच्छ दूध स्वादिष्ट एवं पौष्टिकारक होता है तथा इसे पीने से कोई बीमारी या स्वास्थ्य पर बुरा असर नही पड़ता है। यह बच्चे, बुढ़े एवं हर उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद होता है।

स्वच्छ दूध उत्पादन का महत्व :-

- दूध जल्द खराब होने वाला खाद्य पदार्थ है, अगर इसका स्वच्छ उत्पादन नहीं होता है तो इसके खराब होने की संभावना बढ़ जाती है।
- ऊँटनी के दूध का उपयोग मुख्य रूप से औषधि के रूप में होता है। इसलिए ग्राहक स्वच्छ एवं साफ सुथरे रूप में ही इसे पसंद करते है।
- स्वच्छ दूध को लम्बे समय तक संग्रहीत किया जा सकता है । अगर दूध स्वच्छ रूप से नहीं निकाला जाता है तो उसके परिवहन के दौरान खराब होने की संभावना ज्यादा रहती है।
- दूध में मौजूद धूल, मिट्टी के कण बर्तन में जमा हो जाते हैं। ऐसे दूध को दूर बैठे ग्राहक स्वीकार नहीं करते हैं।
- स्वच्छ दूध खाद्य पदार्थ जनित बीमारियो को फैलने से बचाते हैं ।

ऊँटनियों के बाड़ें तथा आसपास का वातावरण :-

- ऊँटनियों का बाड़ा आरामदायक, आसानी से साफ करने योग्य, हवादार, साफ सुथरा व धुल या गंदगी से मुक्त हो।
- बाड़े की साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखें तथा नियमित रूप से गोबर या खाद को हटायें।
- बाड़ें में झाड़ू दूध दुहने के समय न लगाये। इससे धूल के कण दूध में जाते हैं।

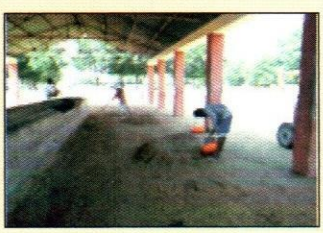

बाड़ें के भीतर की सफाई

बाड़ें के आस-पास की सफाई

दूध दोहन करने वाला व्यक्ति/दूधिया :-

- दूध दोहन करने वाला व्यक्ति स्वस्थ और स्वच्छ हो अन्यथा रोगाणुओं के फैलने का भय रहता है। उनके वस्त्र स्वच्छ एवं कसे तथा नाखुन कटे हो।
- दूध दुहने के पहले उसे अपना हाथ साबुन से धो लेना चाहिए।
- दूध निकालते समय खांसने एवं छिकने से परहेज करें।
- दूध दोहन के स्थान पर नाक की गंदगी बाहर न फेकें ।

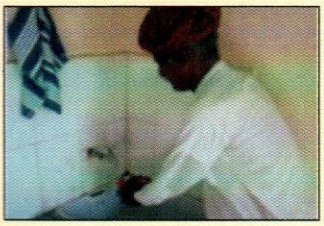

दूध दोहन से पहले हाथों की सफाई

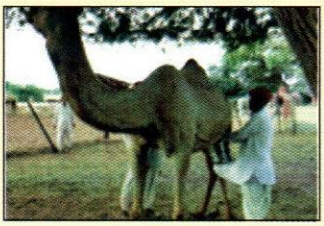

साफ सुथरे कपड़ों में दूध दोहन

साफ जानवर एवं उचित दोहन की विधि:-

- दुधारू पशु को साफ सुथरा नही रखा जाता है तब भी दूध में गंदगी आ सकती है । दुधारू ऊँटनियों के शरीर, थन, पूंछ, एवं फ्लैंक क्षेत्र में मौजूद गोबर, तिनके, मिट्टी, बाल इत्यादि भी दुग्ध दोहन के समय गिरते हैं।

- ऊँटनियों को अच्छी तरह से बाँध ले अगर हो सके तो दुहने के समय पूंछ को पिछले पैरों के साथ बाँध देना चाहिए, ताकि उँटनी पैर न चलाये और इधर उधर न भागे इससे दूध में गंदगी जाने का भी डर रहता है।

- दूध कुशलता पूर्वक व पूर्णता से दुहें। थनों को खीचने की अपेक्षा हल्के से दबाये, अन्यथा थनों को नुकसान पहुँच सकता है। संपूर्ण हथेली विधि, पशु थनों के स्वास्थ्य के लिये अधिक लाभकारी है। हाथों में दूध लगा के थन पर न लगाये और गीला न करें।

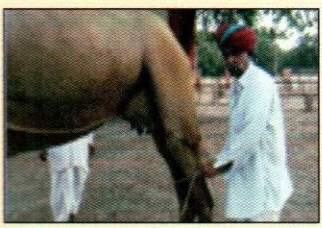

दुग्ध दोहन से पूर्व पैरों को बाँधना

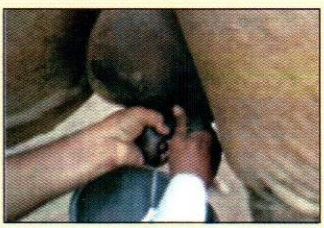

सम्पूर्ण हथेली विधि से दुग्ध दोहन

- दूध दुहने से पहले एवं टोरडी को हटाने के तुरंत बाद थनों को अच्छी तरह से साफ पानी या संभव हो तो साफ पानी में चुटकी भर पोटैशियम परमैग्नेट या क्लोरीन मिलाकर उसके घोल से थनों को धो लें। सर्दी के मौसम में गर्म पानी का उपयोग करना चाहिए। यह प्रक्रिया सफाई के साथ साथ दुग्ध स्राव को भी बढ़ाता है।
- दूध दुहने के कुछ देर बाद तक थन का मुँह खुला रहता है। ऐसे में यदि वह गंदगी के सम्पर्क में आता है तो थनों में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है। दूध दोहन के पश्चात् जीवाणुनाशक में थनों को डुबायें। इससे जीवाणु के संक्रमण से बचाव होता है।
- जानवरों को दूध निकालने के पश्चात् कुछ चारा या दाना दें ताकि वह दुग्ध दोहन के पश्चात् कुछ देर तक खड़े रहे और थन की नली उस अवधि में बंद हो जाये।

थनों की साफ पानी से सफाई

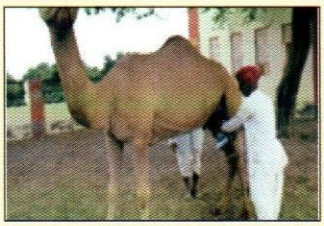

सुखे कपड़े से थनों को पोछना

दूध का भण्डारण:-

- दूध निकालने के बाद दूध को छननी से या मलमल/सूती कपड़े से छान लें। छननी या मलमल/सूती कपड़े को प्रतिदिन धोकर सुखायें।
- दुग्ध दोहन के बाद वजन करें और ठण्डी जगह पर रखें ताकि जीवाणु का विकास न हो तथा दूध स्वच्छ रहे और लम्बे समय तक टीके।
- यदि उसे कुछ देर संग्रहित करना हो तो उसे फ्रिज में डाल दें या ठंडे साफ स्थान पर रखें।
- यदि दूध से कोई बदबू आए या उसका स्वाद या रंग असमान्य लगे तो ऐसे दूध को दूसरे दूध में न मिलाएँ।

दूध दोहन के बर्तन तथा उनकी सफाई:-

- दूध निकालने के काम में लाये जाने वाले बाल्टी, कैन इत्यादि सबसे प्रभावी प्रदूषण के स्रोत हैं। इसके लिये बर्तन मानक गुणवत्ता युक्त पदार्थो से बने हुए होने चाहिए, जिस पर सफाई और निर्जीवीकरण हेतु उपयोग होने वाले विभिन्न रासायनिक घोलों का कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़ें। जिसमें जंग आसानी से न लगें।
- दूध निकालने वाले बर्तनों का उपर से खुला भाग कम चौड़ा होना चाहिए, जिससे दूध में धुल के कण कम से कम प्रवेश पा सके तथा उसे आसानी से साफ किया जा सके।

ूध दुहे जाने वाले बर्तनों की पूरी तरह से सफाई और निर्जीवीकरण करना ाहिए।

ूध दुहने के बाद बरतनों को गर्म पानी एवं डिटर्जेंट से अच्छी तरह धोकर एवं ुखाकर जरूर रखें।

ैसे स्थान पर भण्डारण करें, जहाँ मक्खियों, कीटों, धुल और चूहों इत्यादि से ूषित होने की संभावना नगण्य हो।

बर्तनों की सफाई

डेयरी के बर्तन

ी गुणवता संबंधित जाँच:-

समय समय पर दूध के नमूने लेकर उसकी गुणवता की जाँच करें।

ूध के नमुनों की जाँच कैलिफोर्निया मैस्टाइटिस टेस्ट से समय-समय पर करना ुचित रहता है।

ैस्टाइटिस/थनैला होने पर या किसी बीमारी में ईलाज के दौरान दूध दूहना जारी खें पर ऐसे दूध को उपयोग में न लें। जानवर के स्वस्थ्य होने पर पशुचिकित्सक ी सलाह पर ही पुनः दूध का इस्तेमाल करें।

ुधारू ऊँटनियों के टोले में ब्रुसेला तथा टीबी संबंधित जाँच समय समय पर ुरवायें। इसकी जानकारी के लिए निकट के पशुचिकित्सा केन्द्र पर संपर्क कर कते हैं।

ध छानने के लिए छननी का उपयोग

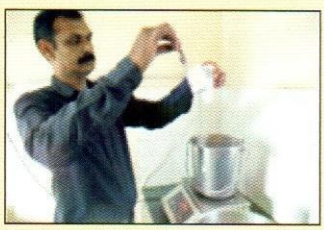

गुणवत्ता जाँच के लिए दूध के नमूने

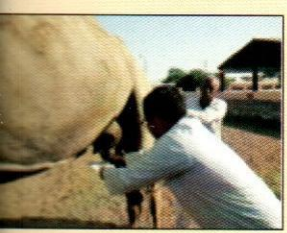

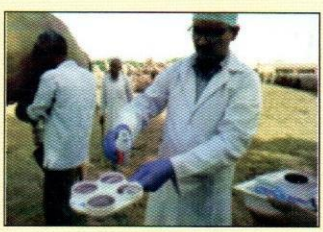

थनैला रोग की पहचान

Print @ School Print # 9982333378